शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 नवंबर 2014
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

इतिहास सतत निवर्तमान है
(उदय प्रकाश की कहानियों के संदर्भ में)

डॉ.संध्या गंगराडे
प्राध्यापक (हिन्दी)
माता जीजा बाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय
इंदौर, म.प्र., भारत

शोध संक्षेप

साहित्य के इतिहास के प्रत्येक युग की एक संवेदनात्मक सत्ता होती है। साहित्यकार उस संवेदना की वृत्ति को महसूस करता है। उसे शब्दों में ढालकर अपनी रचना में व्यक्त करता है। डॉ.रामचंद्र तिवारी की दृष्टि में साहित्य-सृष्टा और साहित्य के इतिहास-विधाता में कोई तात्विक भेद नहीं है। साहित्यकार के इतिहास बोध से रचना कालजयी की श्रेणी में आ जाती है। उदय प्रकाश अपनी कहानियों में समाज के इतिहास का अनूठे ढंग से समावेश कर रहे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में उदय प्रकाश की कहानियों में सतत प्रवहमान इतिहास का विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तावना

साहित्यिक रचनाएं इतिहास में निर्मित होती हैं और इतिहास का निर्माण भी करती हैं। रचना का अस्तित्व इतिहास के भीतर होता है, इतिहास के बाहर नहीं कृतियों की उत्पत्ति में इतिहास की सक्रिय भूमिका होती है और पाठकों द्वारा उनके अनुभव तथा मूल्यांकन का इतिहास उनके जीवन का इतिहास होता।"1 "हर महान कलाकृति अपनी ऐतिहासिक सीमाओं का अतिक्रमण करने की क्षमता रखती है - अपनी संस्कृति के स्मृति -संकेतों, मिथकों, और भाषाई प्रत्ययों से गुजरते हुए हर कविता और उपन्यास मनुष्य के समग्र और सार्वभौमिक अनुभव को आलोकित कर पाते हैं-...उसके सामने सहसा इतिहास, समय और साहित्य की दीवारें ढह जाती हैं।"2

साहित्यकार के इतिहास बोध से साहित्य कालजयी हो जाता है। साहित्य में इतिहास यथार्थ से भी अधिक अर्थपूर्ण हो उठता है, क्योंकि इतिहास जब साहित्य में आता है तो वह मानवीय संवेदनाओं के साथ आता है यह सत्ता या शासक का इतिहास नहीं होता बल्कि यह सामाजिक-सांस्कृतिक दस्तावेज बन जाता है। उदयप्रकाश की कहानियों में इतिहास 'बेकसूर आदमी का हलफनामा' है, देश और समाज को समग्र रूप से अतीत वर्तमान और भविष्य मे परखने का माध्यम है क्योंकि उनके अनुसार - "इतिहास असल में सत्ता का एक राजनीतिक दस्तावेज होता है....जो वर्ण, जाति, या नस्ल सत्ता मे होती है वह अपने हितों के अनुरूप इतिहास निर्मित करती है। इस देश और समाज का इतिहास अभी लिखा जाना बाकी है।"3 उदय प्रकाश अपनी कहानियों में इस देश और समाज का इतिहास अपने ही ढंग से रच रहे है। देखें -

"और अंत में प्रार्थना - अंतहीन परतंत्रता"

"कहीं हमारे देश में लोकतंत्र का असली अर्थ

जनता द्वारा अपनी शत्रु व्यवस्था का चुनाव तो नहीं है ?4

सत्य, अहिंसा, गाँधी और गोड़से या सत्य, अहिंसा, वाकणकर और लोकतंत्र

सत्य, अहिंसा, से स्वतंत्रता (स्वराज) की लड़ाई लड़ते गाँधी, एक लम्बी लड़ाई ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ लड़ते गाँधी। अधनंगे बूढ़े से डरते अंग्रेज, उस गाँधी के सामने ब्रिटिश सत्ता के समस्त हथियार कमजोर पड़ जाते थे। अंग्रेज उस सत्याग्रही (सत्य का आग्रह) को मार नही सके, वह सत्ता जिसका सूर्यास्त नहीं होता था वे गाँधी को न भारत में और न ही इंग्लैण्ड में मार सके उसे मारा तो स्वतंत्रता पश्चात् प्रार्थना के बाद एक हिन्दुस्तानी हिन्दू ने। उस दिन गाँधी की हत्या नहीं उसके सिद्धांतों की हत्या थी, उनके विचारों की हत्या थी। क्या यह अंतिम हत्या थी ? नहीं इसके बाद हर उस आदमी की हत्या इस स्वतंत्र भारत में होती रही है जो तन्त्र के खिलाफ जाता है, जो सत्य अहिंसा, साधन और साध्य की पवित्रता, स्वराज और स्वदेश की बात करता, ईश्वर में (शैतान में नहीं) आस्था रखता है ऐसे हर आदमी को मारा जा रहा है, तरीके बदल रहे हैं, अब बन्दूक की गोली से नहीं 'तंत्र' से मारा जा रहा है। एक गुलामी से दूसरी गुलामी या परतंत्र से लोकतंत्र तीन थके रंगों को एक पहिया ढोता; जिसमें 'सब चुप, साहित्यिक चुप, और कवि जन निर्वाक/चिन्तक शिल्पकार, नर्तक चुप हैं।' और इनके साथ डोमा जी उस्ताद....हैं, डॉ.दिनेश मनोहर वाकणकर भी देखते हैं कि प्रधानमंत्री की यात्रा में ये सब फिर एक साथ हैं।

'और अंत में प्रार्थना' ब्रिटिश सत्ता की गुलामी से मुक्ति के बाद की गुलामी की कथा है जिसमें डॉ.वाकणकर की यन्त्रणा और त्रासदी हर उस आदमी की त्रासदी है, मुक्तिबोध के 'सिरफिरा' चरित्र की त्रासदी है, जिसमें जागृति है, जो प्रतिभावन है, सच्चा, ईमानदार और जागृत है। 'जो जागत है वो रोवत है' इसलिए अव्यावहारिक है, जो अपने पेशे के प्रति ईमानदार है कर्तव्य बोध से बँधा है, ऐसे ही मारा जाएगा जैसे गाँधी प्रार्थना के बाद मंदिर में मारा गया, जैसे सफदर हाशमी 'नुक्कड़' पर मारा गया, जैसे डॉ.वाकणकर सचाई के साथ प्रार्थना करता अस्पताल में मारा गया।

"स्वतंत्र भारत की देशी सरकार का अण्डमान निकोबार"5

"काले पानी का दण्ड दीप" 6

ब्रिटिश सरकार स्वतंत्रता कामियों को, भारतीयों को, सत्याग्रहियों को दण्ड स्वरूप अण्डमान अर्थात काले पानी की सजा देती थी। सत्ता बदली, समय नहीं इस स्वतंत्र भारत में अब भी काले पानी की सजा जारी है। किसी भी सरकारी महकमे के सत्याग्रही को, मुक्ति की चाह रखने वाले को, सत्ता और तन्त्र का विरोध करने वाले के लिये अब भी काले पानी की सजा कायम है उसका नाम विधानपुर, ढ़ींगर गाँव....जैसा कुछ भी हो सकता है जहाँ न सड़कें है, न शुद्ध पेय जल, जहाँ आधुनिकता अभी पहुँची नहीं परन्तु यहाँ भी तन्त्र विकास के नाम पर उस आदिवासी अंचल का विनाश करने से भी नहीं चूकता। नील के अपराधी तो चले गये छोड़ गये देशी अंग्रेज जो आदिवासी अंचल के ढ़ींगर गाँव में पेपर मिल लगाएंगे, फिर जंगल उजाडेंगे जिससे जल स्तर गिरेगा। वे आदिवासियों, जन-जातियों की परंपरागत औषधियों को खत्म कर देंगे, नदी का जल दूषित होगा, अमेरिकी पूँजी और शासन तन्त्र की साँठ-गाँठ इसे उजाड़ देगी।

.........'और अंत में प्रार्थना' भारतीय लोकतंत्र में तंत्र, सत्ता और विचारधारा (?) के अपने हित में उपयोग की कथा है।

पाल गोमरा का स्कूटर...स्मृतियों का कोलाज

"स्मृतियाँ जिजीविषा का सबसे विश्वसनीय सूत्र है।"7

"जो प्रजातियाँ लुप्त हो रही हैं,
यर्थाथ मिटा रहा है जिनका अस्तित्व
हो सके तो हम उनकी हत्या में न हो
शामिल
और संभव हो तो सँभालकर रख लें
उनके चित्र......
ये चित्र अतीत के स्मृति चिह्न है।"8

पाल गोमरा स्वतंत्रता के बाद का वो आम आदमी है जो स्वतंत्रता पूर्व की स्थिति के प्रति 'नास्टेलाजिक' है, भारतीय इतिहास, भारतीय अतीत उसे अन्दर तक सम्मोहित करता है। भाषा में भदेस उत्तर प्रदेश का यह हिन्दी कवि धूमिल मुक्तिबोध, रघुवीर सहाय की तरह मोहभंग की स्थिति में है।

स्मृतियाँ और पालगोमरा - पालगोमरा के अंदर स्मृतियाँ हैं जो उसकी अपनी भोगी हुई भी हैं और जो उसे विरासत में भी मिली हैं। वह भौचक सा इस समय को देख रहा है। वह बाहर से इस युग को आत्मसात करता है, रामगोपाल शर्मा से पालगोमरा बनकर जैसे अपाची इंडियन, रेमू फर्नांडीस, सैम पित्रोदा परन्तु एक ध्रुवीय होती दुनिया, समाजवाद, हिन्दी पत्रिकाओं और अखबारों को दिल्ली से साफ होता देखकर बाजार का विकल्प बनती दुनिया, स्त्रियों का विज्ञापन में (दुर) उपयोग देखकर, मशीन युग से इलेक्ट्रानिक युग तक की यात्रा, पौराणिक चरित्रों का उत्तर आधुनिकी करण देखकर, खाड़ी युद्ध, दिल्ली में डंकल, मंत्रालय के सचिव स्तर के प्रशासनिक अधिकारी को साहित्य विभूषण वेदव्यास सम्मान मिलने जैसी घटनाओं को देखकर उसमें एक आक्रोश (?) उभरता है जो कुण्ठा में बदल जाता है। और उसके अन्दर स्मृति के कोलाज बनने लगते हैं ;- गालिब, मीर, मुक्तिबोध धूमिल........और पिछले पाँच सालों में कवियों की आत्महत्याएँ, गाजियाबाद का लास एंजिलिस की तरह अपराधियों का शहर बनना, यथार्थ का सूचना में बदलना, इतिहास का अंत, ईश्वर की मृत्यु, हिन्दी भाषा (रेख्ता) का संबन्ध मोचियों, जुलाहों, नाइयों, धोबियों, फकीरों, और साधुओं की भाषा होना इकबाल का तराना, दाण्डी मार्च, गाँधी का प्रिय भजन, आजाद हिन्द फौज का तराना पूरा इतिहास उसे स्मरण हो आता है क्योंकि उसे चिन्ता है 'अतीत के स्मृति चिह्न की जो तेजी से नष्ट हो रहे है और नष्ट हो रही है संस्कृति, बाजार इसे लील जाना चाहता है, या लील रहा है।

वारेन हेस्टिंग्स का साँड - आख्यान में लीला

"सच यह भी है कि ढाई सौ साल पहले और आज के बीच कुछ ऐसा भी है, जो जरा भी नहीं बदला है। वह ज्यों का त्यों है। आप कह सकते है कि इतिहास के अंत की घोषणा करने वाले तमाम पण्डितों के बावजूद इतिहास सतत् निवर्तमान है। वह निरन्तर है।"9

भरतीय इतिहास की ऐतिहासिक तिथि 1757, नवाब सिराजुद्दौला, बंगाल के नवाब की पराजय और मीर जाफर का विश्वासघत, लार्ड क्लाइव की जीत, 1857 प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (बगावत, गदर ?) 1947 आधी रात की स्वतंत्रता, भारत विभाजन, रक्त रंजित आजादी और 21वीं शताब्दी

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 नवंबर 2014
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

इतिहास सतत् है......। अंग्रेजों ने इस देश को लूटा और आज भी भारतीय अंग्रेजों द्वारा देश की लूट जारी है। ब्रिटिश सत्ता काल में और आज में कोई फर्क नहीं हैं देखे ”सौ सालों के बाद जब अंग्रेज मालामाल होकर वापस अपने वतन इंग्लैण्ड लौटेगे तब भी इंडिया में उनके जैसे ही नेटिवों का राज होगा। वे लोग वही खाएँगे, जो अंग्रेज खाते हैं। वही पियेंगे, जो अंग्रेज पीते हैं। वे वही भाषा बोलेंगे जो अंग्रेज बोलते हैं। उनके कपड़े, विचार, स्वप्न और आकांक्षाएँ अंग्रेज होंगी; वे हर इंडियन चीज से घृणा करेंगे। वे इंडिया को उससे भी ज्यादा लूटेंगे, जितना विदेशी कंपनियों ने लूटा है।“10

”अनेक यूरोप वासियों के मन में भारत के नाम से महाराजाओं, संपेरों और नटों की तस्वीर उभरती है। इस प्रवृत्ति ने उन चीजों में आकर्षण तथा रोमानियत का संचार किया, जो भारतीय थी।“11 वारेन हेस्टिंग्स इन्हीं यूरोप वासियों का प्रतिनिधि है जिनके मन में भारत को लेकर एक विचित्र प्रकार की धारणा थी इसीलिए वारेन हेस्टिंग्स के बहाने उदय प्रकाश ने उपनिवेशीकरण को स्पष्ट किया है। बंगाल के बाउल गीत, जयदेव और चैतन्य महाप्रभु का कृष्ण कीर्तन, गीत गोविन्द में कृष्ण की लेखनी, भरतीय स्त्रियों और देवियों की विचित्र वेशभूषा और सवारी सब एक सम्मोहन पैदा करते थे। वारेन हेस्टिंग्स का कृष्णमय होना, वृन्दावन और मथुरा घूमना सब एक आकर्षण और सम्मोहन है।

”इतिहास में कथा के मिश्रण और कथा में इतिहास के मिश्रण के बीच एक फर्क है। इतिहास में कथा का मिश्रण इतिहास का खिलौना बनाना है कभी कभी उसका विकृतिकरण भी। कथा में जब इतिहास मिश्रित किया जाता है, वह ज्यादा मूल्यवान होता है क्योंकि ऐसी कथा इतिहास में बनी खाइयों और खाली जगहों को भरती है। कथा न हो तो संभवतः इतिहास भी न हो।“12

‘वारेन हेस्टिंग्स का साँड’- इसी तरह कथा में इतिहास की घटनाएँ कथा में है और इतिहास की खाइयों और खाली जगहों को कथा से भरा है, पूरे इतिहास-बोध के साथ। भारतीय संस्कृति, धर्म और साहित्य के प्रति अंग्रेजों के अनुराग को उदयप्रकाश ने यहाँ विभिन्न तरीकों से रखा है। यहाँ की आध्यात्मिकता और दन्त्यकथाओं को मिलाकर एक अद्भुत बुनावट के साथ अपनी संस्कृति और साहित्य के साथ पाश्चात्य संस्कृति और साहित्य का भी चित्रण किया है। भारतीय इतिहास और ज्ञान को जानने के लिए वारेन हेस्टिंग्स ने क्या किया यह कथा में बुनावट के साथ आया है ”जिसने भी इतिहास पढ़ा है वह यह जानता है कि वारेन हेस्टिंग्स ने गवर्नर जनरल बनने के बाद इंग्लैण्ड से सर विलियम जोन्स, सर चार्ल्स विल्किंस, नाथेनिवल हालहेड और कोल ब्रुक जैसे विद्वानो को भारत बुलाया और उनसे कहा कि इस देश की विद्या और दर्शन के छुपे हुए अनमोल और विलक्षण खजाने को वे दुनिया के सामने लाएँ।“13

भारतीय जीवन और संस्कृति, उच्च और श्रेष्ठ मूल्य और उनका ह्रास दोनो ही भारतीय जीवन की त्रासद विडम्बना है। इसी विडम्बना को कभी मीर जाफर की गद्दारी से तो कभी नवाब सिराजुद्दौला के वफादार मोहनलाल की बेटी चोखी के माध्यम से उदयप्रकाश ने प्रस्तुत किया है। उदयप्रकाश वर्तमान, अतीत और भविष्य को इस तरह मिला देते हैं कि घटना एक कालखण्ड की न रहकर हर काल में गमन करती है। इसी

उद्धरण को लें- "फ्रांसीसी कंपनी में सबसे मुख्य अंतर यह था कि जहाँ फ्रांसीसी कंपनी सरकारी या प्राइवेट सेक्टर की थी वहाँ ईस्ट इण्डिया एक प्राइवेट कंपनी थी। इसीलिए उसके अफसर और मुलाजिम ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए ज्यादा जी-जान लगाते थे।"14 आज भी प्राइवेट कंपनियाँ सरकारी कंपनियों की तुलना में ज्यादा मुनाफा कमा रही हैं।

पीली छतरी वाली लड़की - अंधेर नगरी से भारत दुर्दशा तक

पीली छतरी........कहानी इतिहास तो है परन्तु वर्तमान का, इसी समय का ऐतिहासिक दस्तावेज है "यह तो इसी समय और इसी यथार्थ में अभी जिये जा रहे जीवन का एक ब्यौरा भर है। एक अनिर्णीत अख्यान का एक टुकड़ा।"15 यह ब्यौरा तो आज का है परन्तु इसमें अब तक की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी है। उदयप्रकाश ने इस कहानी में इतिहास को सत्ता का दस्तावेज कहा है। इतिहास जाति, नस्ल या सत्ता के पक्ष में लिखा जाता रहा है। इतिहास में आदिवासियों की उपस्थिति का नकार इस बात का प्रमाण है कि इतिहास सत्ता का ही होता है। वे लिखते हैं "अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई सिर्फ ब्राहमणों, ठाकुरों, बनियों या हिन्दू-मुसलमानों ने ही लड़ी है। अब तक के इतिहासकारों ने जिन नायकों का निर्माण किया था, वे सब इन्हीं पृष्ठभूमियों के थे। उनमें आदिवासी और दलित लगभग नहीं थे।"16

वर्तमान समय, 21वीं शताब्दी के यथार्थ को उन्होंने टुच्चा समय कहा है "यह एक क्रूर टुच्चा अपराधी समय है, जिसमें इस वक्त हम लोग फँसे हैं। यह ठगों, मवालियों जालसाजों, तस्कारों और ठेकेदारों का समय है। और इस वक्त हर ईमानदार, शरीफ और सीध-सादा हिन्दुस्तानी इस राज में काश्मीरी है या मणिपुरी या फिर नक्सलवादी।"17 भारत के किसी भी हिस्से में काश्मीरी या मणिपुरी का रहना कठिन है। उस भारत में जिसका संविधान समानता का अधिकार देता है, देश में कहीं भी बसने की आजादी देता है, और उसी देश में "क्षेत्रीयताएँ, जातीयताएँ और तलछट की घाटियाँ छोटी ताकतें अचानक बाहर की ओर फूट पड़ी है और इस देश के अब तक के बने महा-रूपकों और संघीय मिथकों का विनाश कर रही है।"18 कहीं कोई आर्दश नहीं, वर्षों से राष्ट्रवाद के नाम पर घृणा फैलाने का सिलसिला जारी है "क्या इतिहास का सचमुच अंत हो चुका है ? या फिर इस देश के शासकों और नागरिकों की स्मृतियाँ नष्ट हो चुकी हैं। या यह समय ही एक बिल्कुल बदला हुआ समय है। यह एक नयी दुनिया है, एक नयी विश्व व्यवस्था। इसमें अतीत के अब सारे संदर्भ अ-प्रासंगिक हैं लेकिन अगर ऐसा है, तो अभी 'पोखरण' को क्यों पैदा किया गया? क्या यह सचमुच राष्ट्रवाद ही है या एक तरह की सामुदायिक घृणा ? एक निश्चित इरादे से जगाई गयी सांप्रदायिकता ?"19

तो यह समय है, आज का भारत है, अंधेर नगरी, उगलता गगन घन अंधकार और कहीं कोई जलती मशाल नहीं, जय के कोई आसार नहीं, नगरों से, ग्रामों तक सभी मानव सुखी सुन्दर व शोषण मुक्त कब होंगे ? यह समस्या अब भी जस की तस है, क्योंकि "दरअसल ये दुनिया ट्रेडर्स की, व्यापरियों की हो गई है।"20 इसीलिए "अब कहीं कोई नागरिक, समाज नहीं बचा सिर्फ सरकारें, कंपनियाँ, संस्थाएँ और माफिया गिरोह है।"21

मोहनदास बनाम होरी

गोदान की लालसा लिए होरी अपने नाम और अपनी पहचान से साथ अंतिम सांस लेता है और अपनी 'मरजाद' की रक्षा भी करता है। गरीबी, ऋणग्रस्तता, शोषण के बाद भी होरी की पहचान कायम रहती है उसका आत्माभिमान कुचला नहीं जाता परन्तु 21वींसदी में मोहनदास के सामने

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 नवंबर 2014
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

अपनी पहचान का संकट है, उसके आत्माभिमान को महाबलियों ने चकनाचूर कर दिया है और न्याय भी उन्हीं महाबलियों के पक्ष में जाकर खड़ा हो गया है।

'मोहनदास' इतिहास का नया पाठ है और मोहनदास को गाँधी की पृष्ठभूमि से जोड़कर देखना अपने समय का पाठ है। मोहनदास के बहाने उदयप्रकाश स्वीकारते हैं - "हमेशा की ही तरह कहानी की आड़ में आपको फिर से अपने समय और समाज की एक असली जिन्दगी का ब्यौरा देने बैठा हूँ।"22 अपने समय का ब्यौरा तो उदय प्रकाश दे ही रहे हैं परन्तु यहाँ समय वह नहीं जो कैलेण्डर में है यहाँ समय बँटा हुआ है। यह 21वीं शताब्दी है तो 20वीं शताब्दी भी "मनुष्य रहता एक ही दुनिया में है, किन्तु उसके काल-खण्ड समय व द्वीप साथ बहते हुए एक दूसरे से कितने अलग दिखाई देते हैं। क्या एक आदिवासी कलाकार का समय वही है जिसमें 'आधुनिक' कलाकार रहता है।"23 यही फर्क है बिसनाथ और मोहनदास में। बिसनाथ मोहनदास के समस्त दस्तावेजों के आधार पर उसी के नाम से वो नौकरी पा लेता जिसका हकदार मोहनदास है और मोहनदास अपनी, अपने नाम की पहचान तक खो देता है। और फिर लड़ता है एक लम्बी लड़ाई, न्याय की लड़ाई परन्तु उसे न्याय नहीं मिलता ; मिलती है प्रताड़ना। अन्त मे वह कहता है- "मै किसी भी अदालत में चलकर हलफनामा देने के लिए तैयार हूँ। मेरे बाप का नाम काबा कि मै मोहनदास नहीं हूँ।"24 पूरी कहानी में समय खण्डों में विभक्त है। वह आज समय भी है जब महाबली अन्याय और धोखाधड़ी से 'पावर' प्राप्त कर रहे हैं तो यह 1932-33 का समय भी है जब होरी दातादीन, मातादीन, जमींदार, रायसाहब से घिरा था परन्तु स्वतंत्र भारत का संकट बड़ा है, मोहनदास का संकट होरी के संकट से बड़ा है। वहाँ गोदान की लालसा है यहाँ नौकरी की परन्तु वहाँ पहचान का संकट नही है। 21वीं सदी ने आदमी की पहचान खत्म कर दी है, शायद आदमीयत की भी।

संदर्भ ग्रन्थ

1.साहित्य और इतिहास - दृष्टि - मैनेजर पाण्डेय, भूमिका से
2.पूर्व और पश्चिम, निर्मल वर्मा, वागर्थ, अंक-49 अप्रैल-1999, पृष्ठ 27
3.पीली धरती वाली लड़की, उदय प्रकाश, पृष्ठ 14
4.और अंत में प्रार्थना, उदय प्रकाश, पृष्ठ 141
5.और अंत में प्रार्थना, उदय प्रकाश, पृष्ठ 134
6.और अंत में प्रार्थना, उदय प्रकाश, पृष्ठ 131
7.छुट्टी के दिन का कोरस, प्रियंवद, पृष्ठ 115
8.पाल गोमरा का स्कूटर, उदय प्रकाश, पृष्ठ 76
9.वारेन हेस्टिंग्स का सांड, उदय प्रकाश, पृष्ठ 104
10.वारेन हेस्टिंग्स का सांड, उदय प्रकाश, पृष्ठ 104
11.पूर्व पीठिका, भारत का इतिहास, रोमिला थापर, पृष्ठ 108
12.सभ्यता से संवाद, शंभुनाथ, पृष्ठ 210
13.वारेन हेस्टिंग्स का सांड, उदय प्रकाश, पृष्ठ 138
14.वारेन हेस्टिंग्स का सांड, उदय प्रकाश, पृष्ठ 111
15.पीली छतरी वाली लड़की,उदय प्रकाश, फ्लैप पर से
16.पीली छतरी वाली लड़की, उदय प्रकाश, पृष्ठ 10
17.पीली छतरी वाली लड़की, उदय प्रकाश, पृष्ठ 20
18.पीली छतरी वाली लड़की, उदय प्रकाश, पृष्ठ 42
19.पीली छतरी वाली लड़की, उदय प्रकाश, पृष्ठ 64
20.पीली छतरी वाली लड़की - उदय प्रकाश, पृष्ठ 20
21.पीली छतरी वाली लड़की - उदय प्रकाश, पृष्ठ 21
22.मोहनदास, उदय प्रकाश हंस, अगस्त 2005, पृष्ठ 96
23.पूर्व और पश्चिम, निर्मल वर्मा, वागर्थ, अंक-49 अप्रैल-1999, पृष्ठ 28
24.हंस, अगस्त, 2005, पृष्ठ 127